① BA Part III
Paper VII Gr. A

Q-16. What is accident?
Explain the Concept of Accident proneness.
"दुर्घटना - प्रवणता" की अवधारणा की व्याख्या करें।

2110

दुर्घटना (Accident)

दुर्घटना (Accident) औद्योगिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। सामान्यतः ऐसी घटनाओं को दुर्घटना कहते हैं जिनसे जन-धन की हानि होती है और जो अप्रत्याशित तथा ~~अदूरदर्शी~~ अदूरदर्शी रूप से घटित होती है। दुर्घटना की एक परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है:—

"ऐसी घटनाओं को औद्योगिक क्षेत्र में दुर्घटना की संज्ञा दी जा सकती है जिनसे कर्मचारी, उद्योग एवं उद्योगपति को हानि पहुँचाती हो अथवा ऐसी घटनायें जो आकस्मिक, अप्रत्याशित एवं अदूरदर्शी हो तथा जिनकी उत्पत्ति कार्य परिस्थिति एवं कर्मचारी से होती है।"

दुर्घटना-प्रवणता (Accident Proneness) —

बहुधा जब कोई दुर्घटना होती है तो कर्मचारी की लापरवाही या असावधानी ही उसका मुख्य कारण माना जाता है एवं एक महत्वपूर्ण कारक संयोग (Chance) माना जाता है। इस सन्दर्भ में जब दुर्घटना निरीक्षकों (Accident Inspectors) की नियुक्ति औद्योगिक संस्थानों में की गई तो उन्होंने इस तथ्य का अवलोकन किया कि कुछ व्यक्तियों से ही अधिक दुर्घटनायें होती है। कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जिनसे व्यक्तिगत एवं कार्य परिस्थितियों के कारण दुर्घटनायें होती है।

अतः दुर्घटना प्रवणता औद्योगिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा निरूपित एक ऐसी परिकल्पित अवधारणा है जो कार्यकर्ता के व्यक्तित्व शीलगुण से संबद्ध है। इसे दुर्घटना ग्रहण शक्तिता के (Acc. Liability) के रूप में व्यक्तिगत कारणों की श्रेणी में रखा जा सकता है।

दुर्घटना-उन्मुखता की व्याख्या करते हुए यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि अधिकांश औद्योगिक दुर्घटनाएं कुछ ही व्यक्तियों द्वारा की जाती है। अपने विशिष्ट व्यक्तिगत गठन तथा मनोवैज्ञानिक

(2)

के कारण ऐसे लोग दूसरों की अपेक्षा सहजतः और बारम्बार दुर्घटनाओं के शिकार होने की प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को 'दुर्घटना-प्रवणता' कहा जाता है। इनकी विशिष्ट व्यक्तित्व प्रतिकृति को 'दुर्घटना-प्रवणता' की संज्ञा दी जाती है।

Harrell के अनुसार — "दुर्घटना-उन्मुखता व्यक्ति में उपस्थित दुर्घटना-ग्राह्यता की ऐसी अनवरत प्रवृति है, जो उसकी स्थायी तथा सतत् विशेषताओं का परिणाम है।"

"Accident proneness is the continuing tendency of a person to have accidents as a result of his stable and persisting characteristics."

अतः दुर्घटना-प्रवणता को व्यक्तित्व का एक व्यक्तित्व शीलगुण (Personality trait) माना जाता है।

साधारणतः देखा जाता है कि समान अवस्थाओं में काम करते हुए भी कुछ लोग अपने को दुर्घटनाओं से बिल्कुल बचा लेते हैं। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अपने को रोक नहीं पाते और न सिर्फ दुर्घटना के शिकार होते हैं, बल्कि भविष्य में भी बार-बार शिकार होते रहते हैं। ऐसे ही निरीक्षणों का यह परिणाम हुआ कि दुर्घटना-कारणों का पता लगाने वाले विद्वानों का ध्यान कार्य-परिस्थिति से हटकर व्यक्तित्व कारकों के अध्ययन की ओर स्थानांतरित हो गया। अब उद्योगपतियों को ऐसा प्रतीत हुआ, मानो दुर्घटना का मूल कारण ज्ञात हो गया है। परम्परागत सुरक्षा अभियंताओं ने दुर्घटना के मूल कारणों के रूप में व्यक्ति की लापरवाही, अपर्याप्त कार्य-अवस्था, दोषपूर्ण मशीन तथा इन सबसे महत्वपूर्ण संयोग तत्त्व (Chance factor) का हाथ माना जाता रहा। किन्तु, इस दृष्टिकोण में व्यक्ति-भिन्नता सिद्धांत की उपेक्षा हुई थी। सर्वप्रथम, मनोवैज्ञानिकों ने यह घोषित किया कि दुर्घटनाओं के मूल में स्वतः व्यक्तित्व और उसकी विशिष्टताओं (शीलगुणों) का हाथ है।

बाद के प्रयोगों से यह तथ्य स्थापित हो गया कि दुर्घटना-ग्रहणशीलता में वैयक्तिक भिन्नता (Individual difference) तथा असमान ग्राह्यता (Unequal - Susceptibility) का हाथ रहता है। दुर्घटनाओं के प्रति इसी मान्यता को अर्थात् सिद्धांत को दुर्घटना प्रवणता कहा जाने लगा। प्रयोगों द्वारा देखा गया कि

अधिकांश दुर्घटनाएँ किन्हीं थोड़े से कर्मचारियों द्वारा की जाती हैं। अतः दुर्घटनाओं का वितरण मात्र संयोग तत्व पर आधारित नहीं होता। दुर्घटनाओं का प्राप्त वितरण वक्र अंग्रेजी के 'L' अक्षर की आकृति जैसा होता है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि असमान ग्राह्यता का सिद्धांत दुर्घटनाओं का महत्वपूर्ण कारक है।

दुर्घटना प्रवणता के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण अध्ययन Greenwood (ग्रीनवुड) तथा Woods (वुड्स) ने किया और इन्होंने 4 परिकल्पनाएँ अर्थात् मान्यताएँ प्रस्तुत किया और इनकी प्रायोगिक जाँच की :—

(i) संयोग परिकल्पना (Chance Hypothesis) :— इसके अनुसार, दुर्घटनाओं का कारण संयोग है। दुर्घटनाओं के मूल में व्यक्ति तथा उसकी विशिष्टताओं का कोई हाथ नहीं होता।

(ii) विवर्धित ग्राह्यता परिकल्पना (Increased Susceptibility Hypothesis) :— इसके अनुसार, जो व्यक्ति एक बार दुर्घटना का अनुभव कर लेता है, वह भविष्य में दुर्घटना के लिए अपेक्षाकृत अधिक ग्रहणशील हो जाता है। Schmitt (स्मीट) इसे 'Law of recurrence' (रिकरेंस) कहना पसंद करते हैं। इसकी तुलना Viteles (वाइटेलेस) ने यक्ष्मा रोग से की है, जिसका एक बार शिकार हो जाने पर व्यक्ति भविष्य में भी उस रोग के प्रति दुर्बल हो जाता है।

(iii) असमानदायिक परिकल्पना (Unequal Liability Hypothesis) :— व्यक्ति में दुर्घटना के प्रति असमानदायिता होती है और इससे व्यक्तियों का वितरण-वक्र सामान्य नहीं होकर कोई असामान्य किस्म होता है। अर्थात् कुछ व्यक्ति दूसरों की अपेक्षा दुर्घटनाओं के अधिकदायी हो जाता करते हैं।

(iv) ह्रासित ग्राह्यता परिकल्पना (Decreased Susceptibility Hypothesis) :— इसके अनुसार, जो व्यक्ति एक बार दुर्घटना का अनुभव कर लेता है, उसमें आगे के लिए दुर्घटना-प्रवणता घट जाती है। एक बार आग से जल जाने के पश्चात बच्चा पुनः कभी आग का संस्पर्श नहीं करता।

Greenwood तथा Woods ने अपनी इन चार परिकल्पनाओं का उपयोग बहुत से कारखानों में किया और विभिन्न प्रकार के कर्मचारियों पर अध्ययन किया। इन में से केवल तीसरी परिकल्पना अर्थात् असमानदायिता की परिकल्पना ही सही प्रमाणित हुई। इस प्रकार इस अध्ययन से दुर्घटना

(4)

प्रवणता कि अवधारणा प्रमाणित हो गई। इसकी पुष्टि Newbold ने अपने अध्ययनों से किया। Smith, Marbe, तथा Hildebrandt ने भी दुर्घटना प्रवणता की अवधारणा का समर्थन किया। (1930)
एक महत्वपूर्ण अध्ययन न्यूयार्क शहर के एक मेट्रोपोलिटन इन्श्योरेंस कम्पनी के अवधान में किया गया। इस अध्ययन में रेल कर्मचारियों पर निरीक्षणोपरांत यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश रेल-दुर्घटनायें कुछ ही कर्मचारियों द्वारा की गई थी। अध्ययन-कर्ता ने यह निष्कर्ष निकाला कि — "दुर्घटनाओं का वितरण संयोग पर आधारित नहीं होता, बल्कि बहुत सारी परिस्थितियों के तर्क-संगत परिणाम के कारण वे कुछ मनुष्यों के साथ बारम्बार घटित होती है और दूसरों के साथ कभी-कभी।

"Accidents do not distribute themselves by chance, but that they happen frequently to some men and infrequently to others as logical result of a combination of circumstances."

एडोल्फ वाइटलेस (Viteles) ने भी इस अवधारणा का समर्थन करते हुए कहा :—
"कुछ व्यक्ति दूसरों की अपेक्षा बार-बार दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं, क्योंकि या तो उनमें दुर्घटनाओं के प्रति जन्मजात मनोदैहिक प्रवृत्ति होती है अथवा उनकी मनोवृत्ति या दृष्टिकोण में ऐसा क्षणिक परिवर्तन होता है, जिससे दुर्घटना में उनके शामिल होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। जब स्थिति से ऐसी ही ग्राह्यता का बोध हो तो इसे दुर्घटना-उन्मुखता की संज्ञा दी जाती है।"

"Some individuals become more frequently involved accidents than others because of either an inherent Psyco-Physiological predisposition toward accidents, or because of a temporary change in attitude or outlook which increases the probabilities of being involved in an accident. When a situation which may lead to one arising such susceptility is referred to as accident proneness."

डॉ॰ Eysenck ने भी कहा है कि —
"जैसा की विविध प्रयोगों (अनुसंधान) से मिले प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि दुर्घटना-प्रवणता में कुछ वैयक्तिक प्रतिकृतियाँ अवश्य विद्यमान रहती हैं। जिनका स्वरूप अपराधियों द्वारा प्रदर्शित प्रतिकृतियों से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

(5)

"We must, therefore, conclude that there is considerable evidence to suggest that certain personality patterns go with accident proneness and that these personality patterns are remarkably similar to those exhibited by criminals."